बर्फ पर सहज

लेखनः पैट्रिशिया मिलर तथा ईरान सैलिगमन

चित्रः जॉन टैपिश

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

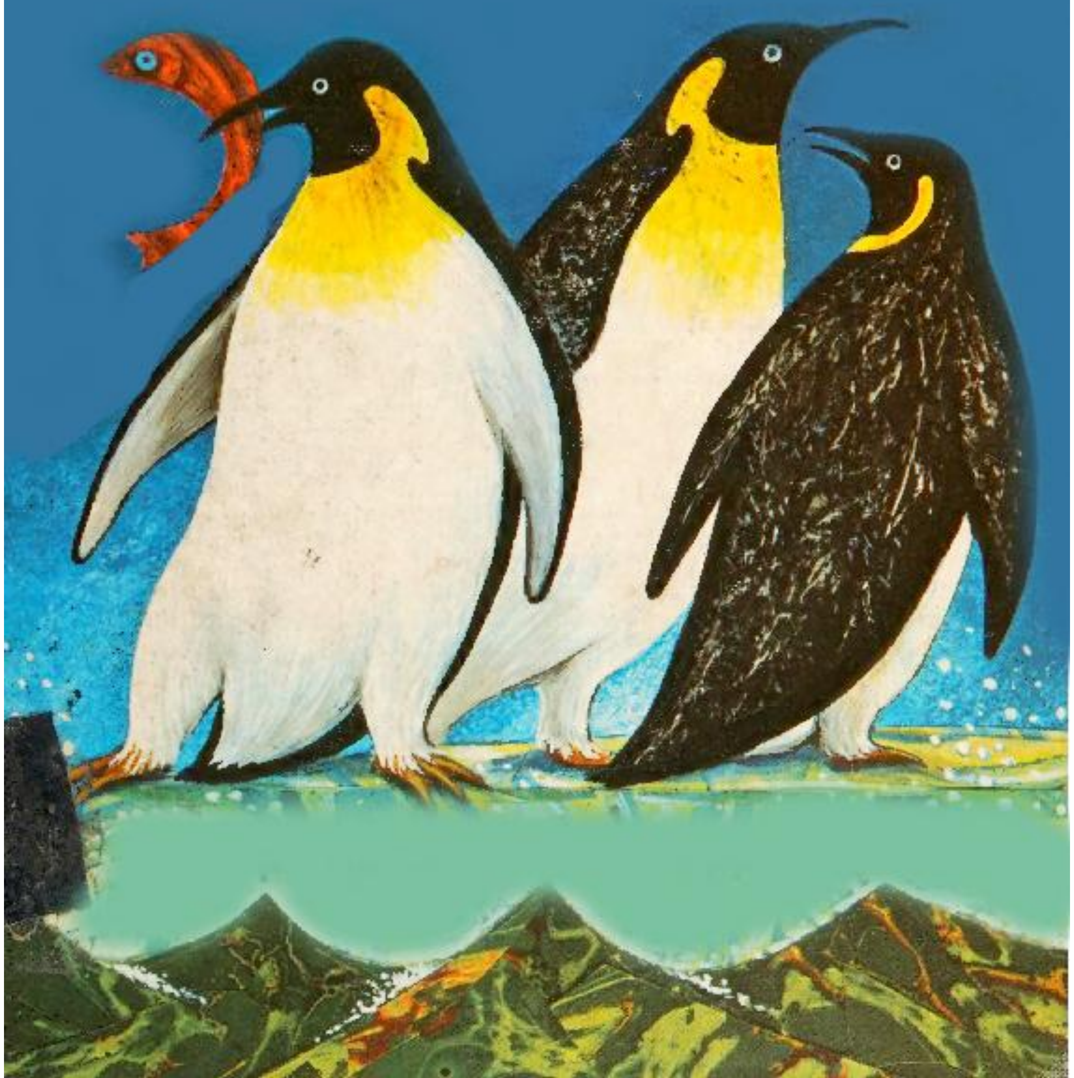

बर्फ पर सहज

लेखनः पैट्रिशिया मिलर तथा ईरान सैलिगमन

चित्रः जॉन टैपिश

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

पेन्गुइन होते तो पक्षी हैं।
पर वे उड़ते नहीं हैं।
वे पानी में तैरते हैं, गोते लगाते हैं,
और उसकी सतह पर तिरते हैं।
वे बर्फ़ पर चलते हैं।

वे ऐसी जगह रहते हैं जो बहुत ही दूर है।
वह जगह अंटार्कटिक कहलाती है।
अंटार्कटिक बर्फ़ और हिम का क्षेत्र है।
वह दुनिया की सबसे सर्द जगह है।

अंटार्कटिक में लाखों पेन्गुइन रहते हैं।
वे सब एक साथ बर्फ पर अपने घर में रहते हैं।

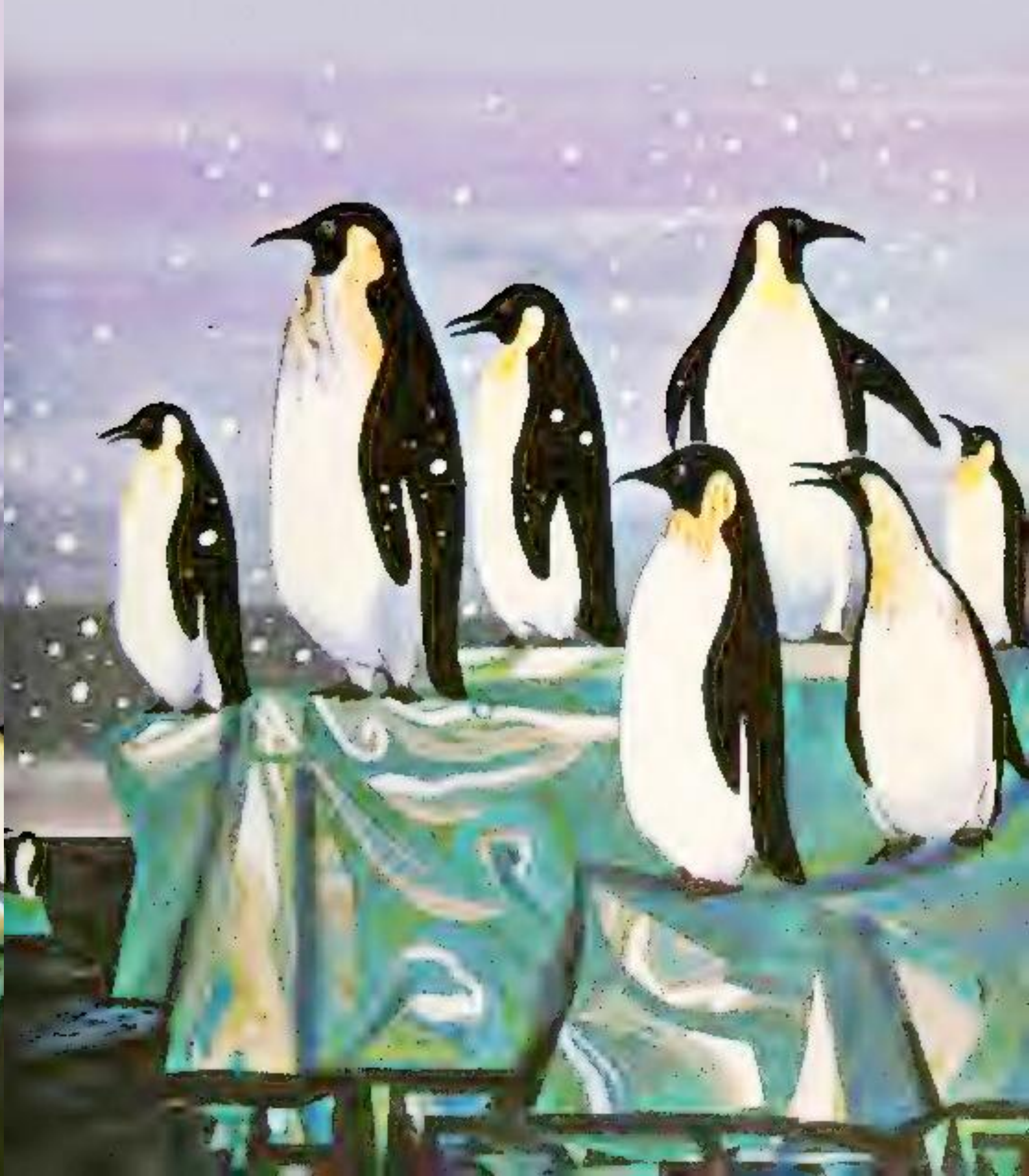

पेन्गुइन काले होते हैं
पर उनकी रोएंदार छाती सफेद।
उनका कद तीन फीट तक का होता है,
और वे मोटे ताज़े होते हैं।
वे ठिगने आदमियों-से लगते हैं,
जिन्होंने काले कोट और सफेद कमीज़ें पहनी हों।
वे सब एक से दिखते हैं।

पेन्गुइन के शरीर छोटे परों से ढ़के होते हैं।
ये पर कड़े और तेलिया होते हैं।
वे पानी को उनके शरीर से
दूर रखते हैं और ठंड को भी।
वे पुन्गुइनों के शरीर को गर्म रखते हैं।

पेन्गुइनों को अपना भोजन पानी से मिलता है।
वे ढ़ेर सारी मछलियाँ खाते हैं
और खूब मोटे बन जाते हैं।
वे अपने शरीर में चर्बी को जमा करते हैं।
यह चर्बी उनके शरीर को गर्म रखती है।

पेन्गुइन अपने दो
छोटे पैरों पर खड़े रहते हैं।
वे बहुत धीरे-धीरे चलते हैं
शरीर को इधर-उधर हिलाते-डुलाते,
डगमग कदमों से।

कभी वे बर्फ़ पर फिसलते हैं।
वे बर्फ़ पर लेट अपने पैरों से
धक्का लगाते हैं।
वे बर्फ़ और हिम में लोटते और खेलते हैं,
और जब वे थक जाते हैं
वे सीधे खड़े हो कर सो जाते हैं।

वे बर्फीले पानी में तैरते हैं।
वे उम्दा तैराक होते हैं,
और तेज़ी से तैरते हैं।
वे अपने फ्लिपर को चप्पूओं की तरह चलाते हैं।
फ्लिपर उनके छोटे चपटे मीन पंख होते हैं।

वे पानी को अपने पैरों से धकियाते हैं
और पानी की सतह पर अपने पेट के बल तिरते हैं।
वे पानी के अन्दर भी तैर सकते हैं,
तकरीबन मिनट भर के लिए।
वे गोत लगाते हैं, तिरते हैं,
फिसलते और पलट कर मुड़ते है।
पेन्गुइन कुशल तैराक होते हैं।

पेन्गुइन हमेशा पानी के पास रहते हैं।
वे पानी में खेलते हैं और मछलियाँ पकड़ते हैं।
जब कोई पेन्गुइन मछली का शिकार करता है,
वह अपना मुँह खोलता है
और पानी का बड़-सा घूंट भरता है।
मछली उसकी कांटेदार जीभ में फंस जाती है।
तब वह पानी थूक देता है और मछली को निगल जाता है।
वे अपना भोजन इसी तरीके से पाते हैं।

हर साल पेन्गुइन अपना घर छोड़ कर दूर तैर जाते हैं।
वे सब एक साथ अधिक भोजन की तलाश में निकलते हैं।
कभी-कभी तो वे 100 मील से भी ज़्यादा दूर तक जाते हैं।
वे वहाँ ढ़ेरों मछलियाँ खाते हैं।
तब वे तैर कर घर वापस लौटते हैं।
वे सहवास करने
और परिवार शुरू करने अपने घर लौटते हैं।

क्या तुम पेन्गुइन के घोंसले की
कल्पना कर सकते हो?
वह बर्फ या हिम का बड़ा पर छिछला गड्ढा होता है।
पेन्गुइन उसमें छोटे-छोटे पत्थर बिछाते हैं।
तब माँ पेन्गुइन उन पत्थरों पर
एक अंडा देती है।

पर एक किस्म के पेन्गुइन कोई घोंसला नहीं बनाते।
वे बर्फ़ पर ही अंडा देते हैं।
पेन्गुइन की अधिकतर किस्में एक ही अंडा देते हैं।
पर कुछ दो। तो कुछ तीन भी।
ये अंडे सफेद या हरापन लिए सफेद होते हैं।
माँ और पिता दोनों ही घोंसले की निगरानी करते हैं।
माँ और पिता दोनों ही अंडे को सेते हैं।

पेन्गुइन अपने घोंसले पर बैठ उसे गरमाते हैं।
तब गरमाए हुए अंडे को अपने पैरों पर रखते हैं।
इससे अंडा गर्म रहता है
और वह पैरों को भी गर्म रखता है।
पेन्गुइन चतुर पक्षी होते हैं।
जब पेन्गुइन अंडों को सेते हैं वे बर्फ खाते हैं,
और अपने शरीर में जमा चर्बी पर ज़िन्दा रहते हैं।

वे अपने अंडे को
चार से पाँच सप्ताह तक सेते हैं।
तब उनमें से पेन्गुइन चूज़े निकलते हैं।
शिशु पेन्गुइन
ज़रा भी पेन्गुइन जैसा नहीं दिखता।
वह छोटा-सा होता है
और उसके रोएं मुलायम होते हैं।
वह न तैर सकता है,
न फिसल सकता है, न गोते लगा सकता है,
ना ही वह अपने-आप खा सकता है।

माँ और पिता अपने चूज़े को खिलाते हैं।
वे घोंसले के पास मछली लाते हैं और उसे चबाते हैं।
शिशु पेन्गुइन उनके मुँह से चबाई हुई मछली को खाता है।
दो सप्ताह तक पेन्गुइन चूज़ा खाता,
और-और खाता जाता है।
उसके पास खाने और मुटाने के सिवा
और कोई काम नहीं होता।

वह लगातार बड़ा और मोटा होता जाता है
और कुछ ही महीनों में
वह घोंसला छोड़ने लायक हो जाता है।
अब वह पानी में उतर सकता है।
वह तैर सकता है और गोता लगा सकता है।
वह मछली पकड़ सकता है।
वह बर्फ़ पर लोट सकता है,
खेल और फिसल सकता है।
और तब वह पूरी तरह बड़ा पेन्गुइन बन जाता है
जो बर्फ़ पर पूरी तरह सहज हो।

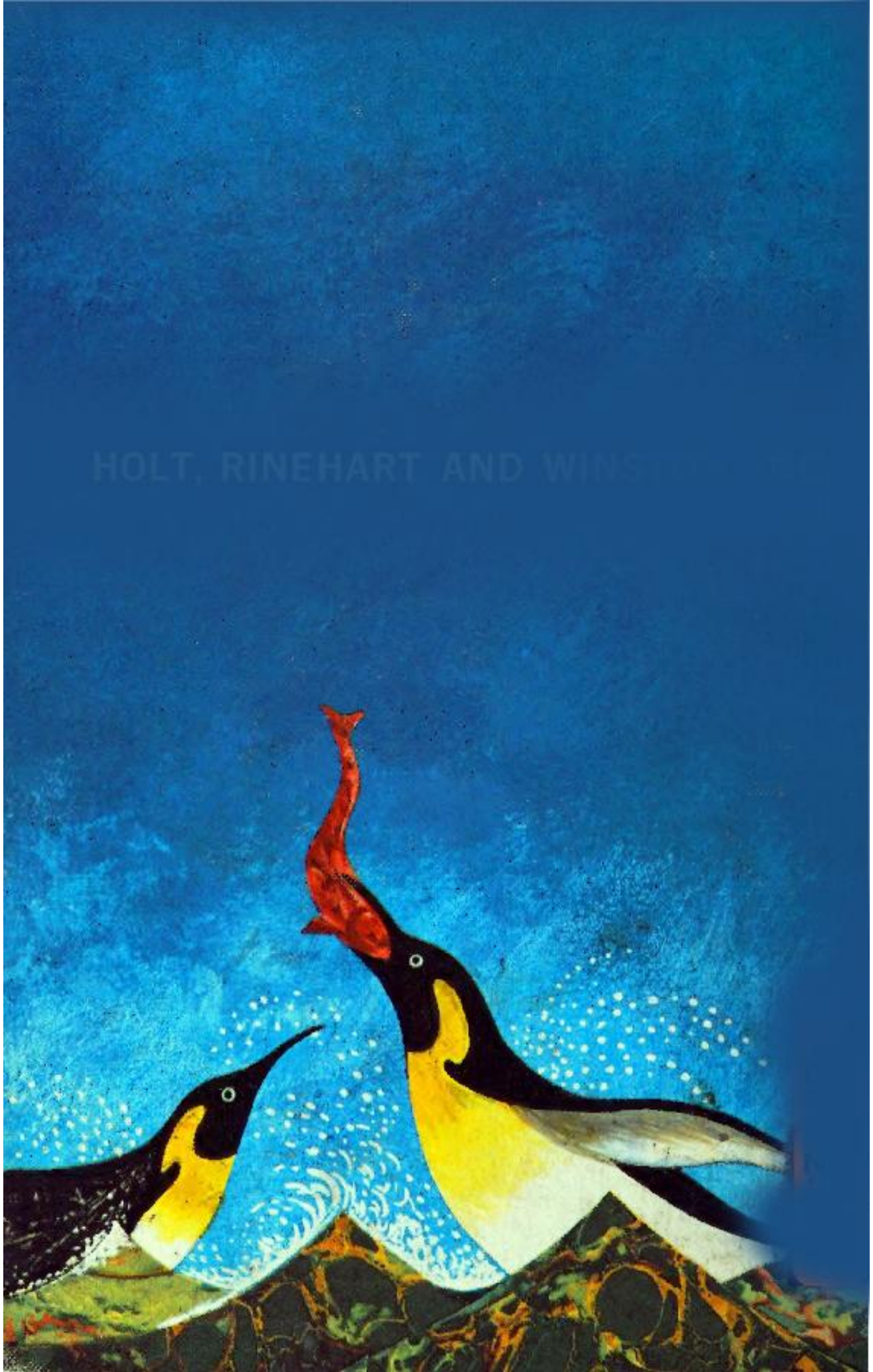
HOLT, RINEHART AND